pulses and oilseeds and launching of a programme for the production of seeds of improved quality ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRIES OF AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT (SHRI R. V. SWAMINATHAN) : (a) to (c). A statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) Yes, Madam. The Indian Council of Agricultural Research has reoriented its research programmes in areas of Dryland Agriculture, pulses and oilseeds production by :

(i) strengthening the existing research centres in terms of infrastructure and development of more scientists and establishing new research centres ;

(ii) increasing the total Plan outlay significantly in the Sixth Plan over actual expenditure of Fifth Plan ;

(iii) developing new programmes of research to refine available technology and develop new strategies ; and

(iv) improving transfer of technology through additional Operational Research Projects, technical publications, stepping up training programmes and increasing number of demonstrations on pulses, oilseeds and dry farming of family farms under Lab to Land Programme.

(b) Yes, Madam. With the help of existing technologies, it is possible to increase the yield in many a dryland areas by 50 to 100 per cent although the production potential of available technologies is much higher.

(c) Besides the steps mentioned under item (a), the Indian Council of Agricultural Research has released improved varieties of principal pulses and oilseeds crops grown in rainfed areas suited to the growing seasons in each region, stepped up breeder's seed production and is providing necessary technical support to the Department of Agriculture and Rural Development in their programmes.

नेपाल को चावल का निर्यात

214. **श्री आर० एन० राकेश :** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का विचार नेपाल के खाद्यान्न संकट को ध्यान में रखते हुये उसे 10 हजार टन चावल देने का है;

(ख) यदि हां, तो यह चावल किस दर पर दिया जायगा;

(ग) क्या सरकार अपने देश में चावल की कमी को देखते हुए इस प्रस्ताव पर पुनर्विचार करेगी; और

(घ) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्रालयों में राज्य मंत्री (श्री आर० वी० स्वामीनाथन) : (क), (ख) और (घ) नेपाल सरकार ने भारत सरकार से उस देश में खाद्यान्नों की अस्थायी कमी को पूरा करने के लिए चावल सप्लाई करने के लिए अनुरोध किया था। दोनों देशों के बीच स्थित निकट तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए और सद्भावना के रूप में भारत सरकार ने जिन्स ऋण के आधार पर 10,000 मीटरी टन चावल सप्लाई करने के लिए 21-9-1982 को नेपाल सरकार के साथ

एक करार किया था। इस मात्रा का परिदान अक्तूबर-नवम्बर, 1982 तक की अवधि के दौरान किया जाना है।

(ग) प्रश्न ही नहीं उठता।

चीनी का उत्पादन

216. **श्री राम प्यारे पनिका** : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि जुलाई, 1982 के बाद चीनी के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है;

(ख) क्या सरकार का विचार चीनी का उत्पादन और बढ़ाने का है; और

(ग) यदि हां, तो चीनी का कितना उत्पादन और बढ़ाने का विचार है और यह उत्पादन किस प्रकार बढ़ाने का विचार है ?

कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्रालयों में राज्य मन्त्री (श्री आर० वी० स्वामीनाथन):

(क) चीनी मौसम की गणना अक्तूबर से सितम्बर तक की जाती है और उत्पादन का अधिकांश भाग गन्ना पेरने की मुख्य अवधि अक्तूबर-अप्रैल/मई में प्राप्त होता है। अगस्त और सितम्बर में तो कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु की कुछेक विशेष मौसम वाली फैक्ट्रियां कार्य करती हैं और मौसम के इन पिछले दो महीनों में चीनी का उत्पादन 1981-82 मौसम में 88,000 मीटरी टन हुआ था जबकि 1980-81 मौसम में 80,000 मीटरी टन उत्पादन हुआ था। अतः उत्पादन में 8,000 मीटरी टन वृद्धि हुई थी।

(ख) और (ग) किसी मौसम के दौरान चीनी का उत्पादन गन्ने की पैदावार और गुड़ तथा खंडसारी निर्माताओं के साथ प्रतियोगिता में चीनी फैक्ट्रियों को गन्ने की उपलब्धता पर निर्भर करता है। चीनी फैक्ट्रियों द्वारा गन्ने का आकर्षक मूल्य देने और सरकार द्वारा किए गए अन्य उपायों के परिणामस्वरूप 1981-82 मौसम में चीनी का उत्पादन 84.34 लाख मीटरी टन के रिकार्ड स्तर पर पहुँच गया है। यह उत्पादन आन्तरिक खपत और निर्यात सम्बन्धी सम्पूर्ण आवश्यकता की अपेक्षा काफी अधिक है जिससे चीनी वर्ष 1981-82 के अन्त में लगभग 33 लाख मीटरी टन का बहुत बड़ा स्टाक शेष बच गया है। अतः चीनी का उत्पादन और बढ़ाने की बजाय उसे उपयुक्त स्तर पर स्थिर करना वांछनीय समझा जाता है। स्टाक का यह उपयुक्त स्तर घरेलू खपत, निर्यात और मौसम के अन्त में उचित मात्रा में स्टाक बचाकर रखने की जरूरतों के अनुरूप होना चाहिये।

Representation from Ajudhya Sugar Mill Mazdoor Sabha, Raja-Ka Sahaspur, Moradabad

217. SHRI SOMNATH CHATTERJEE : Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :

(a) whether he has received a representation dated 12 July, 1982 from Ajudhya Sugar Mill Mazdoor Sabha, Raja-Ka-Sahaspur, Moradabad, about the state of affairs of the Ajudhya Sugar Mills and suggesting various ways and means to improve the situations ;

(b) if so, the salient points raised : and

(c) the action taken by Government in the matter ?